भारतीय कला एवं संस्कृति

सिविल सेवा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

तृतीय संस्करण

लेखक के विषय में

नितिन सिंघानिया पश्चिम बंगाल कैडर में 2013 बैच के IAS अधिकारी हैं और वर्तमान में पश्चिम बंगाल सरकार के अंतर्गत संयुक्त सचिव के पद पर नियुक्त हैं। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता से अर्थशास्त्र में स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है और साथ ही वह एक चार्टर्ड एकाउंटेंट एवं कंपनी सचिव भी हैं। इससे पूर्व वह भारत सरकार के गृह मंत्रालय में सहायक सचिव के रूप में, एवं पश्चिम बंगाल के पूर्व बर्धमान जिले में उप-जिला मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यरत रह चुके हैं।

भारतीय कला एवं संस्कृति

सिविल सेवा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

तृतीय संस्करण

नितिन सिंघानिया

McGraw Hill Education (India) Private Limited

Published by McGraw Hill Education (India) Private Limited
444/1, Sri Ekambara Naicker Industrial Estate, Alapakkam, Porur, Chennai - 600 116

Bhartiya Kala evam Sanskriti, 3e
Copyright © 2020, 2017, 2015 by McGraw Hill Education (India) Private Limited.
No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise or stored in a database or retrieval system without the prior written permission of the publishers. The program listings (if any) may be entered, stored and executed in a computer system, but they may not be reproduced for publication.

This edition can be exported from India only by the publishers,
McGraw Hill Education (India) Private Limited.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 D101417 23 22 21 20 19

Print Book Edition

ISBN (13): 978-81-942446-2-2

ISBN (10): 81-942446-2-5

Disclaimer: The views expressed in this book are of the author and in no way reflects the views of the Government of West Bengal or Government of India, in which author is working or has worked.

Information contained in this work has been obtained by McGraw Hill Education (India), from sources believed to be reliable. However, neither McGraw Hill Education (India) nor its authors guarantee the accuracy or completeness of any information published herein, and neither McGraw Hill Education (India) nor its authors shall be responsible for any errors, omissions, or damages arising out of use of this information. This work is published with the understanding that McGraw Hill Education (India) and its authors are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services. If such services are required, the assistance of an appropriate professional should be sought.

Typeset at Bharti Composers, D-6/159, Sector-VI, Rohini, New Delhi 110085 and printed and bound in India at

Cover Designer: Neeraj Dayal

Cover Printer:

Visit us at: www.mheducation.co.in

Write to us at: info.india@mheducation.com

CIN: U80302TN2010PTC111532

Toll Free Number: 1800 103 5875

परम श्रद्धेय दादा एवं दादीजी, व
माँ एवं पापाजी को समर्पित.....

तृतीय संस्करण में नए तथ्य

- **02 नये अध्याय –**

  1. *बौद्ध और जैन धर्म*
  2. *विदेशी यात्रियों की नज़र से भारत।*

- **01 नया परिशिष्ट –** भारतीय कला और संस्कृति *(करेंट अफेयर्स)*।

- **अध्याय – 1 में नए विषय:** चनहुदड़ो, कोट दीजी, सूत्कागेन्डोर, बालू, दाइमाबाद, कोट बाला, केरल-नो-धोरो और मांड जैसे **महत्वपूर्ण IVC** स्थलों का विवरण। **बादामी गुफा मंदिर** वास्तुकला का विवरण, भारत के बाहर के प्रमुख मंदिर, देरासर और बसदी, भारत में **Whispering Gallaries, अवध वास्तुकला।**
- **अध्याय – 2 में नए विषय:** पूर्व ऐतिहासिक चिलकला, **गंजिफा काड्र्स, टिकुली कला,** नए और अधिक प्रासंगिक चित्र, गुडाहांडी और योगीमाथा शिला आश्रय।
- **अध्याय – 3 में नए विषय: अधिक साड़ियों के महत्वपूर्ण विवरण** जैसे – उप्पद जामदानी साड़ी, वेंकटगिरी साड़ी, कोटपाड़ साड़ी। **महत्वपूर्ण धातु शिल्पों की तालिका जैसे** – अरनमुला कन्नड़ी (धातु दर्पण), नेत्तुरपेट्टी के आभूषण बक्से, चंदी तारकशी, स्वामीमलाई कांस्य, चमड़े के शिल्प – कोंगलन सिलाई वाले जूते, पाबू सिलाई वाले जूते, कोल्हापुरी चप्पल, कटकी चप्पल, तिल्ला जूती, मोजड़ी, मुल्तानी खुस्सा। **महत्वपूर्ण लकड़ी के शिल्प की तालिका जैसे** – निर्मल चित्रकारी, काश्तकारी लकड़ी पर नक्काशी, सेंटालम (चंदन की नक्काशी), खतमबंद लकड़ी शिल्प, सिक्की घास शिल्प, शीतल पट्टी घास की चटाई, खुंडा – बांस के लठ, कावड़ चल तीर्थस्थल, चोकत्से मेज, इत्यादि। कढ़ाई का काम जैसे खटवा सजावट का काम, लम्बानी, सुज़ानी (या सुज़नी), गारा, किम्खाब, डोंगरिया स्कार्फ – कपरगोंडा, इत्यादि। **भारत में विभिन्न प्रकार की बुनाई** – पाटा बुनाई, मशरु बुनाई, बोहरा टोपी बुनाई, पटकु बुनाई, पट्टु बुनाई, वांगखेई फी, शाफी लैंफी आदि। भारत में **दरी बुनाई** – मुसल्ला रग, कालीन, खबदान, नवलगुंद दरी, जमकालम, आदि। **टाई और डाई कपड़ा पेंटिंग और कपड़ा प्रिंटिंग** की विभिन्नताओं जैसे – पागदु बंधु टाई और डाई, तेलिया रूमाल, अजरख प्रिंटिंग, माता नी पछेड़ी, थिग्मा, पिचवाई, दाबू, मुथंगी, तंगालिया शाल, ढालापत्थर परदा और कपड़े, कानी शॉल, आदि, पर व्यापक तालिका। भारत की अन्य प्रसिद्ध हस्तशिल्पों पर तालिका।
- **अध्याय – 4 में नए विषय:** पुस्तक के अंत में **मानचित्र**, हाल ही में यूनेस्को (UNESCO) द्वारा घोषित धरोहर स्थलों में 02 और स्थलों का अद्यतन।
- **अध्याय – 5 में नए विषय: कर्नाटक संगीत** के प्रारंभिक प्रतिपादक, कर्नाटक संगीत त्रिमूर्ति। महत्वपूर्ण **लोक गीतों** का संयोजन – झुमर, बोरगीत, झूरी। संगीत वाद्ययंत्र संतूर और एक संस्था प्रयाग संगीत समिति का संयोजन।
- **अध्याय – 6 में नए विषय: महत्वपूर्ण लोक नृत्य** हुलिवेशा, टिप्पणी, गरडी, तेराताली, होजागिरी, आदि।
- **अध्याय – 11 में नए विषय:** यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में कुंभ मेले का विवरण।
- **अध्याय – 13 में नए विषय:** किस्सा-इ-संजान, भारत में प्रमुख **यहूदी प्रार्थनाग्रह,** भारत में **यहूदियों के प्रकारों** पर विस्तृत विवरण। **अन्य प्रमुख धर्मों** जैसे सनामही, अय्यावाही, सरनावाद, बहाई मत, आदि का विवरण।

- **अध्याय - 15 में नए विषय:** विस्तृत पारसी साहित्य, सिख साहित्य में अरदास, लेखन की चंपू शैली, मध्यकालीन साहित्य में संयोजन, आदि।
- **अध्याय - 20 में नए विषय:** हिंदू त्योहारों की अब आसान तालिका प्रारूप में रखी गई है। महत्वपूर्ण त्योहार नबकलेबर, मोअत्सु मोंग, येमशे, लोसार, खान, आदि जोड़े गए।
- **अध्याय - 21 में नए विषय:** महत्वपूर्ण भारत रत्न पुरस्कार विजेताओं का संयोजन, अभ्यास प्रश्नों का पूरी तरह से नया सेट।
- **परिशिष्ट - 02 में नए विषय:** भक्ति आंदोलन पर फ्लो चार्ट, भक्ति संतों की विस्तृत तालिका।
- **परिशिष्ट - 04 में नए विषय:** हाल के भौगोलिक संकेत श्रेणीवार और तालिका प्रारूप में जोड़े गए हैं।

साथ ही, पिछले वर्षों (2018, 2019) में प्रश्नों और अभ्यास प्रश्नों का एक नया सेट आवश्यक अध्यायों में शामिल किया गया है।

द्वितीय संस्करण में नए तथ्य

दो नए अध्याय:

1. प्राचीन और मध्यकालीन भारत में सिक्के

2. विदेश में भारतीय संस्कृति

परिशिष्ट 05: भारत में हाल के भौगोलिक संकेत

इसके अलावा, शीर्षक को और अधिक केंद्रित और व्यापक बनाने के लिए मौजूदा 22 अध्यायों और चार परिशिष्टों में कई प्रासंगिक विषयों को जोड़ा गया है।

नए विषयों की एक सूची नीचे दी गई है:

अध्याय - 1 में नए विषय: बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएँ, गांधार विद्यालय में यूनानी और रोमन कला, उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएं, प्राचीन शिलालेख और आदेश, प्राचीन विश्वविद्यालय, बौद्ध और जैन तीर्थ स्थलों की विस्तृत सूची, सूर्य मंदिरों और अग्नि मंदिरों की सूची, भारत और विदेशों में अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों की सूची और 12 ज्योतिर्लिंग, मध्यकालीन वास्तुकला में शेरशाह का योगदान, जम्मू और कश्मीर की वास्तुकला, चार्ल्स कोरिया द्वारा योगदान आदि।

अध्याय - 2 में नए विषय: भीमबेटका शिला पेंटिंग, जोगीमारा गुफा चित्रकला, बादामी गुफा मंदिरों में भित्ति चित्र, फाड पेंटिंग, चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग, पिथोरा पेंटिंग और सौरा पेंटिंग।

अध्याय - 3 में नए विषय: पारंपरिक क्षेत्रीय साड़ियों की एक विस्तृत सूची, कढ़ाई के काम की एक सूची और विभिन्न क्षेत्र विशिष्ट फर्श पर चित्रकला की एक सूची।

अध्याय - 5 में नए विषय: मांडो और कोलट्टम लोक संगीत, अन्य लोक संगीत परंपराओं की विस्तारित सूची, प्रमुख लोक वाद्ययंत्रों की सूची और संगीत से संबंधित विभिन्न क्षेत्रीय समुदाय।

अध्याय - 6 में नए विषय: आठ शास्त्रीय नृत्यों में से प्रत्येक में अधिक विस्तृत जानकारी, लोक नृत्यों की विस्तारित सूची आदि।

अध्याय - 7 में नए विषय: प्राचीन संस्कृत नाटकों में पात्र, लोक थिएटरों की विस्तारित सूची, आधुनिक भारतीय रंगमंच और हाल ही में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को की सूची में परिवर्धन।

अध्याय - 12 में नए विषय: प्राकृत, पालि और अपभ्रंश भाषाओं पर विस्तृत टिप्पणी, भारत में प्राचीन लिपियों की एक आकर्षक सूची।

अध्याय - 13 में नए विषय: बौद्ध धर्म और जैन धर्म के तहत विभिन्न अवधारणाओं पर विस्तृत टिप्पणी, जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उप-संप्रदाय, हिंदू धर्म के तहत प्रमुख बोधिसत्व और तपस्वी, पंथ और संप्रदाय, विष्णु के विभिन्न अवतार और इस्लाम, यहूदी धर्म, पारसी धर्म और ईसाई धर्म पर एक संक्षिप्त टिप्पणी।

अध्याय - 15 में नए विषय: बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, पारसी साहित्य, सिख साहित्य।

अध्याय - 17 में नए विषय: दक्षिण भारतीय सिनेमा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी।

अध्याय - 19 में नए विषय: विभिन्न युगों पर विस्तृत टिप्पणी।

अध्याय - 20 में नए विषय: जैन, बौद्ध और पारसी धर्म से संबंधित संक्षिप्त टिप्पणी।

तीसरे संस्करण की भूमिका

भारतीय कला और संस्कृति के तीसरे संशोधित और अद्यतन संस्करण को पाठकों को प्रस्तुत करके मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं पिछले संस्करणों पर पाठकों की सकारात्मक स्वीकृति और रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए मैं आभारी हूं।

प्रत्येक नए संस्करण में, मैं समृद्ध भारतीय संस्कृति और विरासत के ज्ञान को अधिक व्यापक, रोचक और पठनीय शैली में प्रस्तुत करने को चुनौती के रूप में स्वीकार करता हूं।

तीसरे संस्करण को **मोटे तौर पर लगभग सभी अध्यायों में प्रासंगिक महत्वपूर्ण परिशिष्टों के साथ बदलाव किया गया है** (*पुस्तक की शुरुआत में परिशिष्टों की व्याख्यात्मक सूची प्रदान की गई है*)।

इसके अलावा, प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जा रहे प्रश्नों के चलन को देखते हुए, एक परिशिष्ट के साथ-साथ दो नए अध्यायों को भी जोड़ा गया है, जैसे:

नए अध्याय

1. **बौद्ध और जैन धर्म**
2. **विदेशी यात्रियों की नज़र से भारत**

नया परिशिष्ट

1. **भारतीय कला और संस्कृति (करेंट अफेयर्स)**

साथ ही, पिछले वर्षों के **प्रश्नों** और **अभ्यास प्रश्नों के नए सेट** को आवश्यक अध्यायों में शामिल किया गया है।

माइंड मैपिंग के माध्यम से आकांक्षियों की तैयारी को आसान बनाने के लिए, भारत के यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों पर एक समग्र **मानचित्र** पुस्तक के अंत में संलग्न किया गया है। मुझे आशा है कि यह आकांक्षियों के उद्देश्य को पूरा करेगा।

मुझे विश्वास है कि पाठक इस **संशोधित** संस्करण को अधिक उपयोगी पाएंगे। ईमेल के माध्यम से उनके सुझाव इस पुस्तक को और भी अधिक प्रासंगिक और सार्थक बनाने में मेरी मदद करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं !!!

नवम्बर, 2019

नितिन संघानिया
e-mail: nitinsinghania.ca@gmail.com

आभार

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि, मेरे द्वारा विगत वर्षों में हस्तलिखित नोट्स, सिविल सेवा और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में संलग्न अभ्यर्थियों के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं।

मैं अपने माता-पिता, मेरी पत्नी सुदीप्ता, और भाई-बहन नैंसी और नॉयल का आभारी हूँ, क्योंकि शोध और लेखन के लिए समर्पित होने के कारण मैं उन्हें अपना समय नहीं दे पाया।

''माँ एवं पापाजी, मेरे अनुकरणीय आदर्श बनने हेतु आपके प्रति मेरा सम्मान एवं गहरी कृतज्ञता समर्पित है। जब कभी भी मुझे आवश्यकता पड़ी, तब आपका सहयोग और प्रोत्साहन ही मेरी शक्ति के एकमात्र आधार स्तम्भ रहे।''

सुश्री सोनिया विघ तथा श्री शौनक चक्रवर्ती, और श्री अंकित जलान को मेरा हार्दिक धन्यवाद, जिनकी सहायता के बिना यह पुस्तक सम्भव नहीं हो सकती थी।

लेखन कार्य की प्रेरणा प्रदान करने हेतु मैं श्री आर.एस. अग्रवाल (Ranker's Classes), वाजीराम और रवि, ALS एवं विजन IAS की सराहना करता हूं। वे ख्याति प्राप्त विषय-विज्ञ भी आभार के पात्र हैं कई ई-स्रोतों के साथ जिनके बहुमूल्य लेखन, इस पुस्तक को मूर्त रूप प्रदान करने में उपयोगी सिद्ध हुए।

गांधी स्मृति पुस्तकालय, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एल.बी.एस.एन.ए.ए.) मसूरी एवं अतुल फोटोस्टेट-मुखर्जी नगर ने मेरे चिन्तन एवं विचार प्रणाली को समृद्ध करने हेतु विभिन्न स्रोत प्रदान कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस तीसरे संस्करण के लिए, मैं विशेष रूप से श्री नीरज राव और श्रीमति शमा परवीन की सहायता और समर्थन के लिए ऋणी हूं। बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों से प्राप्त सुझाव भी मददगार थे। मैं उनमें से हर एक का शुक्रगुजार हूं।

अंत में, मैं श्री तन्मय राय चौधरी, सुश्री शुक्ति मुखर्जी, श्रीमति शालिनी झा, सुश्री ज्योति नागपाल, सुश्री मालविका शाह, सुश्री अंजली चक्रवर्ती एवं मैक्ग्रॉ-हिल इंडिया की पूरी सहायक टीम के प्रति इस कार्य को रूचिकर एवं यथासंभव त्रुटिहीन बनाने के लिए, उनके सहयोग के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

अंततः मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक पाठकों को भारत की संस्कृति को बेहतर रूप से समझने में सार्थक सिद्ध होगी।

–नितिन सिंघानिया

रूझान विश्लेषण

प्रारंभिक परीक्षा में वर्ष-वार अंक

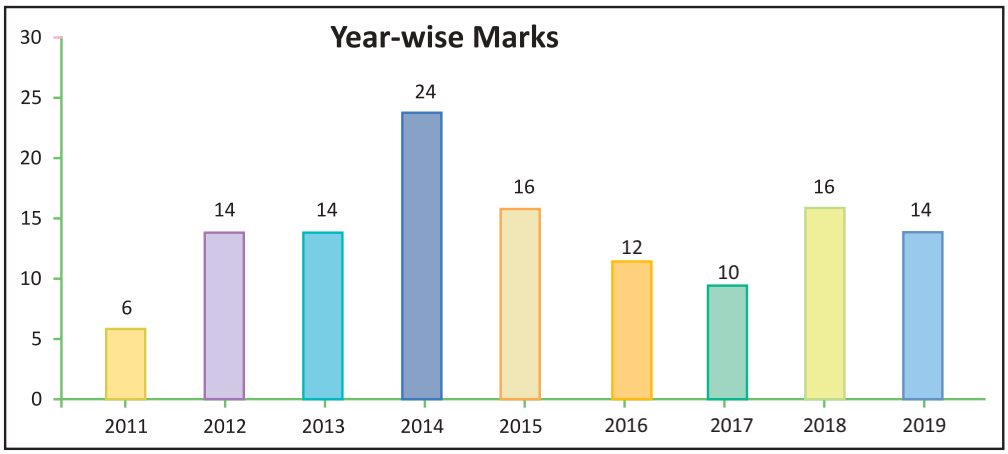

टिप्पणी: वर्ष 2011 में संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) ने प्रारंभिक परीक्षा का पैटर्न एवं पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन किये। नई योजना में भारतीय कला एवं संस्कृति को सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्नपत्र में सम्मिलित किया गया है जिसमें प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होता है।

मुख्य परीक्षा में वर्ष-वार अंक

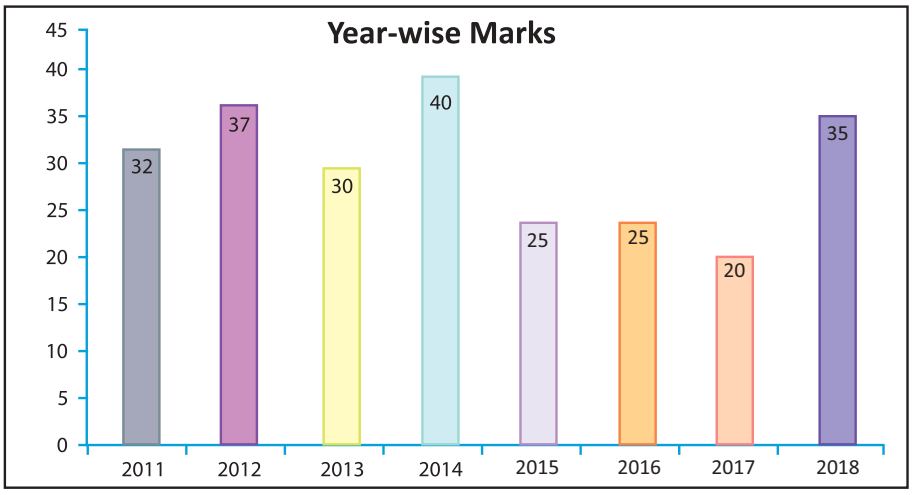

टिप्पणी: वर्ष 2013 में, संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) ने मुख्य परीक्षा का पैटर्न एवं पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन किये। नई योजना में भारतीय संस्कृति एवं विरासत को सामान्य अध्ययन प्रथम प्रश्नपत्र में सम्मिलित किया गया है। यह प्रश्नपत्र कुल 250 अंकों का होता है।

विषय-सूची

तीसरे संस्करण में नए तथ्य vii

द्वितीय संस्करण में नए तथ्य ix

तीसरे संस्करण की भूमिका xi

आभार xiii

रूझान विश्लेषण xiv

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-2019 1–4

भाग-A-दृश्य कला

अध्याय 1 **भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला और मृद्भाण्ड** 1.1–1.96

परिचय *1.2*
हड़प्पाई कला और वास्तुकला *1.3*
मौर्य कला और स्थापत्य कला *1.9*
मौर्योत्तर कला *1.15*
बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएं *1.19*
गुप्त काल *1.21*
महत्वपूर्ण प्राचीन अभिलेख और लेख *1.25*
मंदिरों की वास्तुकला *1.28*
प्राचीन भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय *1.45*
भारत में मुख्य बौद्ध तीर्थस्थल *1.58*
भारत में मुख्य जैन तीर्थस्थल *1.59*
मध्यकालीन भारत में वास्तुकला *1.60*
इंडो-इस्लामिक वास्तुकला *1.61*
आधुनिक वास्तुकला *1.77*

अध्याय 2 **भारतीय चित्रकलाएं** 2.1–2.37

परिचय *2.2*
चित्रकला के सिद्धांत *2.2*
प्रागैतिहासिक चित्रकला *2.3*
भारत में भित्ति चित्रकला *2.5*
भारत में लघु चित्रकला *2.10*

चित्रकला की राजस्थानी शैली *2.16*
पहाड़ी चित्रकला शैली *2.20*
रागमाला चित्रकला *2.21*
आधुनिक भारतीय चित्रकला *2.23*
भारत में लोक चित्रकरी *2.27*

अध्याय 3 **भारतीय हस्तशिल्प** **3.1-3.26**

परिचय *3.2*
कांच निर्मित वस्तुएं *3.2*
कपड़े पर हस्तशिल्प *3.3*
टाई एंड डाई *3.3*
कढ़ाई कला *3.6*
हाथीदांत की शिल्पकला *3.11*
चांदी के शिल्प *3.12*
मिट्टी के बर्तनों का काम *3.12*
कांस्य शिल्प *3.13*
अन्य धातु शिल्प *3.14*
चर्म उत्पाद *3.16*
विभिन्न प्रकार के खिलौने *3.19*
प्रस्तर पात्र *3.20*
फर्श पर कलाएं *3.21*

अध्याय 4 **भारत में यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों की सूची** **4.1-4.8**

यूनेस्को (UNESCO) द्वारा चयन के मानदंड *4.2*
  सांस्कृतिक स्थलों के लिए मानंदड *4.2*
  प्राकृतिक स्थलों के लिए मानदंड *4.2*
घोषित स्थलों की विधिक स्थिति *4.3*
भारत में यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों की सूची *4.3*
  सांस्कृतिक स्थल *4.3*
  प्राकृतिक स्थल *4.6*
  विश्व विरासत स्थल दर्जे के लाभ *4.6*

भाग-B-प्रदर्शन कला

अध्याय 5 **भारतीय संगीत** **5.1-5.34**

परिचय *5.2*
भारतीय संगीत का इतिहास *5.2*
भारतीय संगीत का रचना विज्ञान *5.3*
  स्वर *5.3*
  राग *5.4*
  ताल *5.6*

थाट 5.7
राग के अन्य घटक 5.7
भारतीय संगीत का वर्गीकरण 5.8
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत 5.9
हिन्दुस्तानी संगीत की अर्ध-शास्त्रीय शैली 5.13
कर्नाटक संगीत 5.15
लोक संगीत 5.18
शास्त्रीय और लोक गीत का समागम 5.22
संगीत वाद्य संत्र 5.25
संगीत में आधुनिक विकास 5.28
संगीत से जुड़े समुदाय 5.29

अध्याय 6 **भारतीय नृय विधाएं** 6.1-6.29

परिचय 6.2
नृत्य के स्वरूप 6.2
भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाएं 6.3
भरतनाट्यम 6.3
कुचिपुड़ी 6.5
कथकली 6.7
मोहिनीअट्टम 6.8
ओडिसी 6.9
मणिपुरी 6.11
कथक 6.12
सत्रीया 6.13
भारत के लोक नृत्य 6.15
छऊ 6.15
गरबा 6.15
डांडिया रास 6.16
तरंग मेल 6.16
घूमर या गंगोर 6.16
कालबेलिया 6.16
चारबा 6.16
भांगड़ा/गिद्दा 6.16
दादरा 6.17
जवारा 6.17
मटकी 6.17
गौर मारिया 6.17
आलकाप 6.17
बिरहा 6.17
पाइका 6.18
बागुरुम्बा नृत्य 6.18
जाट-जाटिन 6.18

झुमर या झुमहर *6.18*
डंडा-जात्रा *6.18*
बिहू *6.18*
थांग टा *6.19*
रांगमा *6.19*
सिंघी छम *6.19*
कुम्मी *6.19*
मईलट्टम *6.19*
बुट्टा बोम्मालू *6.19*
कइकोट्टीकली *6.20*
पढ़यनि *6.20*
कोलकलि-परिचाकलि *6.20*
पटा कुनीथा *6.20*
चकयार कुथु *6.20*
झूमर *6.21*
कर्मा नाच *6.21*
राउत नाच *6.21*
दुम्हल *6.21*
फुगडी *6.21*
चेराव *6.21*
दलखई *6.21*
हुलिवेशा *6.22*
टिप्पणी *6.22*
गरडी *6.22*
तेरातली *6.22*
होजागिरी *6.22*

अध्याय 7 **भारतीय नाट्यकला** **7.1-7.15**

परिचय *7.2*
शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला *7.2*
लोक नाट्यकला *7.4*
आनुष्ठानिक नाट्यकला *7.6*
मनोरंजन आधारित नाट्यकला *7.7*
दक्षिण भारत की नाट्यकला *7.10*
आधुनिक भारतीय रंगमंच *7.12*

अध्याय 8 **भारतीय कठपुतली कला** **8.1-8.7**

परिचय *8.2*
धागा कठपुतली *8.3*
छाया कठपुतलियां *8.4*
दस्ताना कठपुतलियां *8.5*
छड़ कठपुतलियां *8.6*

अध्याय 9 **भारतीय सर्कस** **9.1-9.5**

ग्रेट इंडियन सर्कस *9.2*
कीलरी कुन्हीकन्नन *9.2*
भारत की प्रमुख सर्कस कंपनियां *9.2*
सर्कस-एक सीमांत उद्योग *9.4*
संभव समाधान *9.4*

अध्याय 10 **भारत में मार्शल आर्ट** **10.1-10.8**

कलारीपयट्टू *10.2*
सिलम्बम *10.2*
थांग-ता और सरित सरक *10.3*
चेइबी गद-गा *10.3*
परी-खंडा *10.4*
थोडा *10.4*
गटका *10.4*
मर्दानी खेल *10.5*
लाठी *10.5*
इन्बुआई कुश्ती *10.5*
कुट्टू वरिसाई *10.5*
मुष्टि युद्ध *10.6*

अध्याय 11 **अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की यूनेस्को सूची** **11.1-11.7**

परिचय *11.2*
मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची *11.2*
कुडियट्टम (संस्कृत नाट्यकला), 2008 में सम्मिलित *11.2*
रामलीला: 2008 में सम्मिलित *11.3*
वेदपाठ की परम्परा: 2008 में सम्मिलित *11.3*
रम्मन-2009 में सम्मिलित *11.3*
मुडियेट्टू (Mudiyettu): 2010 में सम्मिलित *11.3*
कालबेलिया: 2010 में सम्मिलित *11.4*
छऊ: 2010 में सम्मिलित *11.4*
लद्दाख का बौद्ध पाठ: 2012 में सम्मिलित *11.4*
संकीर्तन: 2013 में सम्मिलित *11.4*
पंजाब में जंडियाला गुरु के ठठेरों द्वारा पारम्परिक पीतल और ताम्बे के बर्तन बनाने की शिल्प को 2014 में सम्मिलित किया गया *11.5*
नवरोज: 2016 में सम्मिलित *11.5*
योग: 2016 में सम्मिलित *11.5*
कुंभ मेला: 2017 में सम्मिलित *11.5*

भाग-C-भारत की संस्कृति

अध्याय 12 **भारत में भाषाएं** **12.1-12.19**

परिचय *12.2*
भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण *12.2*
भाषाओं का भारतीय-आर्य समूह *12.2*
प्रचीन भारतीय-आर्य समूह *12.3*
द्रविड़ समूह *12.5*
चीनी-तिब्बती समूह *12.6*
आस्ट्रिक *12.7*
अन्य *12.7*
शास्त्रीय भाषा का दर्जा *12.9*
मापदंड *12.9*
लाभ *12.10*
भारत की प्राचीन लिपियां *12.11*
सिंधु लिपि *12.12*
ब्राह्मी लिपि *12.12*
गुप्त लिपि *12.13*
खरोष्ठी लिपि *12.13*
वट्टेलुत्तु लिपि *12.14*
कदम्ब लिपि *12.14*
ग्रन्थ लिपि *12.14*
सारदा लिपि *12.14*
गुरमुखी लिपि *12.15*
देवनागरी लिपि *12.15*
मोड़ी लिपि *12.15*
उर्दू लिपि *12.16*

अध्याय 13 **भारत में धर्म** **13.1-13.17**

परिचय *13.2*
हिंदू धर्म *13.2*
हिंदू धर्म के अंतर्गत चार प्रमुख पंथ *13.3*
श्रमण सम्प्रदाय *13.5*
इस्लाम *13.7*
ईसाई धर्म *13.8*
सिख धर्म *13.9*
पारसी धर्म *13.11*
यहूदी धर्म *13.12*
भारत में अन्य प्रमुख धर्म *13.14*

अध्याय 14 **बौद्ध धर्म और जैन धर्म** **14.1–14.21**

बौद्ध धर्म *14.2*
- बुद्ध के सम्बन्ध में मूल बातें *14.2*
- प्रारम्भिक बौद्ध सम्प्रदाय *14.3*
- बौद्ध धर्म के अंतर्गत अवधारणाएं और दर्शन *14.3*
- चार बौद्ध परिषद *14.4*
- हीनयान बौद्धवाद *14.5*
- महायान बौद्धयान *14.6*
- बौद्ध धर्म में बोधिसत्व *14.7*
- थेरवाद बौद्ध धर्म *14.9*
- वज्रयान बौद्ध धर्म *14.9*
- बुद्ध द्वारा भ्रमण किये गये स्थल *14.10*
- बुद्ध के 16 अर्हत *14.10*
- बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अन्य प्रमुख व्यक्तित्व *14.11*
- नवयान बौद्ध धर्म *14.11*

जैन धर्म *14.11*
- वर्धमान महावीर के सम्बन्ध में मूल बातें *14.12*
- जैन शिक्षाएं और दर्शन *14.12*
- जैन धर्म में दो प्रमुख विचारधाराएं (शाखाएं) या सम्प्रदाय *14.14*
- दिगम्बर और श्वेताम्बर संप्रदायों के अंतर्गत उप-संप्रदाय *14.15*
- जैन धर्म की लोकप्रिय प्रथाएं *14.16*
- जैन ध्वज *14.17*

अध्याय 15 **भारतीय साहित्य** **15.1–15.29**

परिचय *15.2*

प्राचीन भारत में हिंदू साहित्य *15.3*

पालि और प्राकृत में साहित्य *15.11*

जैन साहित्य *15.13*

सिख साहित्य *15.15*

द्रविड़ साहित्य *15.16*

मध्यकालीन साहित्य *15.20*

आधुनिक साहित्य *15.22*
- हिंदी साहित्य *15.22*
- बंगाली, ओडिया और असमिया साहित्य *15.23*
- गुजराती, राजस्थानी और सिंधी साहित्य *15.24*
- कश्मीरी साहित्य *15.24*
- पंजाबी साहित्य *15.25*
- मराठी साहित्य *15.25*

अध्याय 16 **दर्शन विचारधाराएं** **16.1–16.10**

परिचय *16.2*
- **I.** परम्परागत या रूढ़िवादी विचारधारा *16.2*

II. धर्म विरोधी विचारधारा *16.2*
रूढ़िवादी विचारधारा *16.3*
सांख्य विचारधारा *16.3*
योग विचारधारा *16.4*
न्याय विचारधारा *16.4*
वैशेषिक विचारधारा *16.5*
मीमांसा विचारधारा *16.5*
वेदान्त विचारधारा *16.6*
धर्म विरोधी विचारधारा *16.7*
चार्वाक विचारधारा या लोकायत दर्शन *16.7*

अध्याय 17 **भारतीय सिनेमा** **17.1–17.14**
परिचय *17.2*
भारतीय सिनेमा का इतिहास *17.3*
दक्षिण भारतीय सिनेमा *17.9*
विवादास्पद फिल्मों का दौर *17.9*
भारतीय चलचित्र अधिनियम, 1952 *17.10*

अध्याय 18 **प्राचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी** **18.1–18.12**
परिचय *18.2*
गणित *18.2*
औषधि *18.5*
भौतिक शास्त्र और रसायन शास्त्र *18.7*
जहाज निर्माण और नौपरिवहन *18.9*

अध्याय 19 **भारत में कैलेण्डर** **19.1–19.11**
परिचय *19.2*
भारतीय कैलेण्डर के रूपों का वर्गीकरण *19.7*
भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर *19.9*

अध्याय 20 **भारत के मेले एवं त्यौहार** **20.1–20.24**
परिचय *20.2*
धार्मिक त्यौहार *20.2*
हिंदू त्यौहार *20.3*
मुस्लिम त्यौहार *20.4*
ईसाई धर्म के त्यौहार *20.6*
सिख त्यौहार *20.7*
जैन पर्व *20.8*
बौद्ध त्यौहार *20.10*
सिंधी उत्सव *20.11*
पारसी या ज़रथुष्ट्री उत्सव *20.11*
धर्मनिरपेक्ष उत्सव *20.12*
उत्तर-पूर्व भारत के त्यौहार *20.14*
भारत के मेले *20.19*

अध्याय 21 **पुरस्कार और सम्मान** **21.1–21.10**

परिचय *21.2*
- भारत रत्न *21.2*
- पद्म पुरस्कार *21.4*
- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार *21.5*
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार *21.6*
- अन्य साहित्य सम्मान *21.7*

अध्याय 22 **कानून और संस्कृति** **22.1–22.6**

परिचय *22.2*
भारत के संविधान से *22.2*
भारतीय गुप्त कोष अधिनियम, 1878 *22.3*
प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 *22.3*
पुरावस्तु (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम, 1947 *22.4*
प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्मारक और पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष (राष्ट्रीय महत्व की घोषणा) अधिनियम, 1951 *22.4*
पुरावस्तु और बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 *22.5*
सार्वजनिक अभिलेख अधिनियम, 1993 *22.5*

अध्याय 23 **भारत के सांस्कृतिक संस्थान** **23.1–23.13**

परिचय *23.2*
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण *23.2*
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र *23.3*
ऑल इंडिया रेडियो *23.3*
नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय *23.4*
सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र *23.5*
भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार *23.6*
भारतीय सांस्कृतिक समबन्ध परिषद् *23.6*
भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् *23.8*
भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट (INTACH) *23.9*
साहित्य अकादेमी *23.10*
संगीत नाटक अकादेमी *23.11*
ललित कला अकादेमी *23.11*

अध्याय 24 **प्राचीन और मध्यकालीन भारत में सिक्के** **24.1–24.10**

आहत मुद्राएं *24.2*
हिंद-यूनानी सिक्के *24.3*
सातवाहनों के सिक्के *24.3*
पश्चिमी क्षत्रपों या हिंद-शकों के सिक्के *24.4*
गुप्त काल में जारी किए गए सिक्के *24.4*
वर्द्धनों के सिक्के *24.5*

चालुक्य राजाओं के सिक्के *24.6*
राजपूत राजवंशों के सिक्के *24.6*
पांड्य और चोल राजवंश के सिक्के *24.6*
तुर्की और दिल्ली सल्तनत के सिक्के *24.7*
मुगल सिक्के *24.8*

अध्याय 25 **विदेश में भारतीय संस्कृति** **25.1–25.12**

भारतीय संस्कृति को विदेश तक कौन ले गया? *25.2*
भारत के प्रमुख प्राचीन बंदरगाह *25.2*
गणित : भारत से विदेश तक *25.4*
विदेश में भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी *25.5*
विदेश में भारतीय धर्म का प्रभाव *25.6*
विदेश में भारतीय भाषाएं *25.8*
विदेश में भारतीय मंदिर वास्तुकला की परंपरा *25.8*
भारतीय विश्वविद्यालयों और विद्वानों की भूमिका *25.10*
विदेश में भारतीय खेल और खेलकूद *25.11*

अध्याय 26 **विदेशी यात्रियों की नजर से भारत** **26.1–26.10**

परिचय *26.2*
मेगास्थनीय | इंडिका *26.3*
फाह्यान | बौद्ध राज्यों के अभिलेख *26.3*
ह्वेनत्सांग | सी-यू-की *26.4*
अल-मसुदी | मुरुज-उल-जेहाब *26.5*
अल-बरूनी | किताब-उल-हिन्द *26.5*
मार्कोपोलो | सर मार्कोपोलो की पुस्तक *26.6*
इब्नबतूता | रेहला *26.6*
निकोलो डे-कॉन्टी *26.7*
अब्दुर रज्जाक | मातला-उस-सादैन-वा-माजमा-उल-बहरीन *26.7*
डोमिंगो पेस | क्रोनिका डॉस रीस डी बिसनागा *26.7*
विलियम हॉकिन्स (1608-1611 ईसवी) *26.8*
सर थॉमस रो (1615-1619 ईसवी) *26.8*
जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर (1638-1643 ईसवी) *26.8*
फ्रेंकोइस बर्नियर | मुगल साम्राज्य में यात्राएं *26.8*

भाग-D-परिशिष्ट

परिशिष्ट-1: **दिल्ली-सात बहनों का एक शहर** **A1.1–A1.4**

परिचय *A1.2*
दिल्ली के सात नगर *A1.2*

परिशिष्ट-2: भक्ति व सूफी आंदोलन **A2.1-A2.14**

भक्ति आंदोलन का उदय *A2.2*
सूफी आंदोलन *A2.7*

परिशिष्ट-3: भारत के प्रसिद्ध व्यक्तित्व **I3.1-I3.8**

चाणक्य-सम्राट निर्माता *A3.2*
अशौक-बौद्ध वास्तुकला का एक प्रतीक *A3.2*
समुद्रगुप्त-संस्कृति पुरुष *A3.3*
कालिदास-प्रेम प्रसंगयुक्त नाटकों के प्रमुख रचयिता *A3.3*
शशांक-हिंदू धर्म का एक महान संरक्षक *A3.3*
हर्षवर्धन-महायान बौद्ध धर्म के महान संरक्षक *A3.4*
धर्मपाल-बौद्ध शिक्षाओं के संरक्षक *A3.4*
गोरखनाथ *A3.4*
अमीर खुसरो-शास्त्रीय संगीत के प्रतीक *A3.5*
मार्को पोलो प्रसिद्ध इतालवी यात्री *A3.5*
रुद्रमा देवी-एक साहसी महिला सम्राट *A3.5*
मुहम्मद बिन तुगलक *A3.6*
नरसी मेहता *A3.6*
महमूद बेगड़ा *A3.6*
एकनाथ *A3.7*
अकबर *A3.7*
अहिल्याबाई होल्कर *A3.7*
रामकृष्ण परमहंस *A3.8*

परिशिष्ट-4: हाल के भौगोलिक संकेत **A4.1-A4.6**

जी. आई. (GI) के महत्वपूर्ण तथ्य *A4.2*
भारत में हाल ही में पंजीकृत जी. आई. की सूची *A4.3*
कुछ भौगोलिक संकेतों के पंजीकरण पर निषेध *A4.5*

परिशिष्ट-5: भारतीय कला एवं संस्कृति (करेंट अफेयर्स) **A5.1-A5.12**

एयर इंडिया ने हज यात्रियों को फ्लाइट में जमजम पानी ले जाने की अनुमति दी *A5.2*
भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद *A5.2*
सेवा भोज योजना *A5.2*
बिहार में गांधी सर्किट *A5.2*
प्रसाद योजना *A5.3*
सरकार ने विरासत स्थलों को अपनाया *A5.3*
हड़प्पा बस्ती में युगल की कब्र *A5.4*
वेदांत देशिक (1268-1369) *A5.4*
सरदार वल्लभभाई पटेल - स्टेच्यू ऑफ यूनिटी *A5.4*

रामानुज – स्टेच्यू ऑफ इक्वैलिटी (Statue of Equality) *A5.4*
स्वामी विवेकानंद *A5.5*
संत कबीर *A5.5*
गुरु नानक देव *A5.5*
नवरोज *A5.6*
मकरविल्लकु उत्सव *A5.7*
अट्टुकल पोंगल *A5.7*
बथुकम्मा उत्सव *A5.7*
बेहदिन ख्लाम (Behdien Khlam) उत्सव *A5.8*
विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन *A5.8*
कोन्याक नृत्य *A5.8*
लेह सिंधु दर्शन त्यौहार *A5.9*
माई सन टेंपल कॉम्प्लेक्स *A5.9*
वास्तुकला की दुनिया की राजधानी *A5.10*
भारत का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक *A5.10*
चौखंडी स्तूप *A5.10*
चारमीनार *A5.11*
स्टूको (Stucco) मूर्तिकला *A5.11*
सांची स्तूप *A5.11*
भारत का 37वां यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलं *A5.12*
यूनेस्को की पहल *A5.12*

पुस्तक का अवलोकन प्राप्त करने हेतु ऑनलाइन विडियो तक पहुंचने के लिए

QR कोड को स्कैन करें

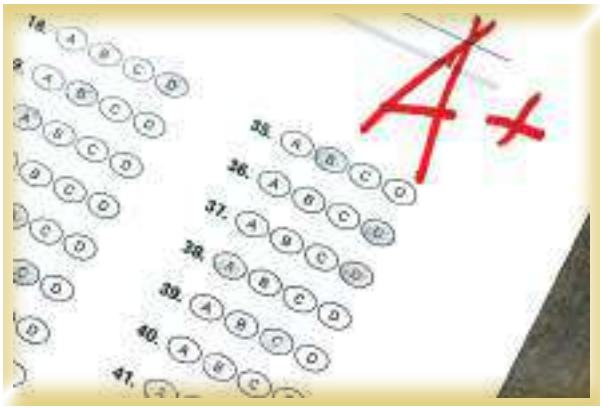

2019

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न - 2019

1. निम्नलिखित में से कौन सा **हड़प्पा स्थल** नहीं है?
   (a) चनहुदड़ो
   (b) कोट दीजी
   (c) सोहगौरा
   (d) देसलपुर

2. अशोक के चित्र के साथ **"रान्यो अशोक"** (राजा अशोक) निम्नलिखित में से किस मूर्तिकला शिलालेख में उल्लेखित है?
   (a) कंगनहल्ली
   (b) सांची
   (c) शाहबाजगढ़ी
   (d) सोहगौरा

3. निम्नलिखित पर विचार करें:
   1. बुद्ध का प्रतिनिधित्व।
   2. बोधिसत्वों के मार्ग पर चलना।
   3. प्रतिमा पूजन और अनुष्ठान।

उपरोक्त में से कौन **महायान बौद्ध धर्म** की विशेषता/विशेषताएं हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

4. **"कल्याण मंडप"** का निर्माण इस राज्य के मंदिर निर्माण में एक उल्लेखनीय विशेषता थी-
   (a) चालुक्य
   (b) चंदेल
   (c) राष्ट्रकुट
   (d) विजयनगर

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   1. **संत निम्बार्क अकबर** के समकालीन थे।
   2. **संत कबीर शेख अहमद सरहिंदी** से बहुत प्रभावित थे।

   ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?
   (a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

6. **मियां तानसेन** के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही **नहीं** है?

(a) तानसेन उसे सम्राट अकबर द्वारा दिया गया उपाधि था।

(b) तानसेन ने हिंदू देवी-देवताओं पर ध्रूपद की रचना की।

(c) तानसेन ने अपने संरक्षकों पर गीतों की रचना की।

(d) तानसेन ने कई रागों का आविष्कार किया।

7. निम्नलिखित में से किस मुगल सम्राट ने सचित्र पांडुलिपियों से ध्यान हटाकर एल्बम और व्यक्तिगत चित्र पर **जोर दिया**?

(a) हुमायूं

(b) अकबर

(c) जहांगीर

(d) शाहजहां

उत्तर

1. (c)

स्पष्टीकरण: चनहुदड़ो (पाकिस्तान में), कोट दीजी (पाकिस्तान में) और देसलपुर (गुजरात) हड़प्पा सभ्यता के स्थल हैं, जबकि सोहगौरा (यूपी में गोरखपुर के पास) में, मौर्य काल का प्राकृत भाषा (ब्राह्मी लिपि में लिखित) में एक ताम्र शिलालेख पाया गया है।

2. (a)

व्याख्या: कंगनहल्ली (कर्नाटक में) पहली शताब्दी ईसा पूर्व - तीसरी शताब्दी ईस्वी का एक बौद्ध स्थल है। इस स्थल पर मौर्य राजा अशोक की एक पत्थर की मूर्ति है, जिसमें ब्राह्मी लिपि में लिखा एक लेबल "रान्यो अशोक" है। (मूर्तिकला में अमरावती स्कूल की विशेषताओं को दर्शाया गया है)। स्थल पर एक विशाल स्तूप भी है। सांची में, एक बहुत प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप है जो यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है। शाहबाजगढ़ी (पाकिस्तान) में खरोष्ठी लिपि में अशोक के शिलालेख हैं और ये ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के हैं।

3. (d)

व्याख्या: महायान बौद्ध धर्म के तहत, बुद्ध को भगवान माना जाता है और महायान बौद्ध धर्म के तहत एक शिष्य बोधिसत्व के मार्ग का अनुसरण करता है। सिद्धांत भी प्रतिमा पूजन और अनुष्ठान और समारोहों पर जोर देता है।

4. (d)

व्याख्या: कल्याण मंडप (या विवाह मंडप) विजयनगर साम्राज्य के मंदिरों की एक प्रमुख विशेषता है। उदाहरण - हम्पी में विट्ठल मंदिर परिसर के अंदर स्थित कल्याण मंडप।

5. (d)

व्याख्या: शेख अहमद सिरहिंदी (1564-1624) नक्शबंदी सूफी क्रम के थे और अकबर के धार्मिक विचारों का विरोध करते थे। हालाँकि, कबीर 15 वीं शताब्दी के संत हैं और शेख अहमद सरहिंदी के जन्म से पहले ही उनकी

मृत्यु हो गई थी। इसके अलावा, संत निम्बार्क अकबर के समकालीन नहीं थे। इतिहासकारों में उनके जन्म के वर्ष को लेकर भारी असहमति है। हालाँकि, आधुनिक ऐतिहासिक शोध उन्हें 13वीं-14वीं शताब्दी का बताते हैं।

6. (a)

व्याख्या: ग्वालियर में जन्मे तानसेन अकबर के दरबार में नवरत्नों में से एक थे। "मियां" अकबर द्वारा उन्हें दिया गया उपाधि था। तानसेन हिंदू देवी-देवताओं पर आधारित ध्रूपद संगीत के प्रस्तावक थे और उन्होंने कई नए रागों का निर्माण किया। उन्होंने अकबर जैसे अपने संरक्षक पर भी गीतों की रचना की।

7. (c)

व्याख्या: अकबर तक, वास्तुकला और सचित्र पांडुलिपियों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। जहाँगीर के शासनकाल से (वह खुद एक चित्रकार था), मुख्य रूप से **वनस्पतियों और जीवों पर आधारित** व्यक्तिगत चित्रकला पर जोर दिया गया।

भाग-A

दृश्य कला

1

भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला और मृद्‌भाण्ड

इस अध्याय से संबंधित वीडियो को चलाने के लिये

QR कोड को स्कैन करें

परिचय

'वास्तुकला' यानी आर्किटेक्चर शब्द, लैटिन शब्द 'टैक्टन' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ निर्माता (बिल्डर) होता है। अत:, जब से आदिकालीन मनुष्यों ने अपने लिए आश्रय का निर्माण करना प्रारंभ किया, तभी से वास्तुकला विज्ञान का प्रादुर्भाव प्रारंभ हुआ। वहीं, दूसरी ओर मूर्तिकला (स्कल्प्चर) शब्द प्रोटो-इंडो-यूरोपीय (पी.आई.ई.) मूल 'केल' से लिया गया है, जिसका अर्थ 'मोड़ना' होता है। मूर्तियां, कला की लघु रचनाएं होती हैं। ये या तो हस्तनिर्मित होती हैं या उपकरणों से बनाई जाती हैं और अभियांत्रिकी व मापन की तुलना में सौंदर्यशास्त्र से अधिक संबंध रखती हैं।

वास्तुकला और मूर्तिकला के बीच अंतर

अंतर बिंदु	वास्तुकला	मूर्तिकला
आकार व विस्तार	वास्तुकला भवनों के डिजाइन और निर्माण को संदर्भित करती है।	मूर्तियां कला की अपेक्षाकृत लघु **त्रि-आयामी** रचनाएं होती हैं।
प्रयुक्त सामग्री	वास्तुकला में सामान्यत: पत्थर, लकड़ी, कांच, धातु, रेत आदि जैसी **विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के मिश्रण** का उपयोग किया जाता है	जबकि मूर्तियां सामान्यत: एक प्रकार की सामग्री से ही बनी होती हैं।
सिद्धांत	वास्तुकला में **अभियांत्रिकी** और गणित **का अध्ययन** समावेशित होता है। इसके लिए विस्तृत और सटीक मापन की आवश्यकता होती है।	मूर्तिकला में रचनात्मकता और कल्पना का समावेश होता है और यह सटीक मापन पर बहुत अधिक निर्भर नहीं होती है।
उदाहरण:	ताजमहल, लाल किला आदि।	नटराज, नर्तकी की कांस्य मूर्ति आदि।

भारतीय वास्तुकला

भारतीय कला और वास्तुकला की कहानी विकास की कहानी है। प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर ब्रिटिश शासन तक, भवनों और मूर्तियों की अपनी स्वयं की एक कहानी है। महान साम्राज्यों का उद्भव और पतन, विदेशी शासकों का आक्रमण, (जो धीरे-धीरे स्वदेशी बन गए) विभिन्न संस्कृतियों और 'शैलियों का संगम आदि भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास में परिलक्षित होते हैं।

भारतीय वास्तुकला का वर्गीकरण

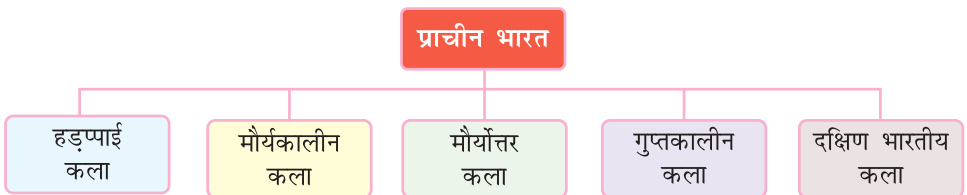

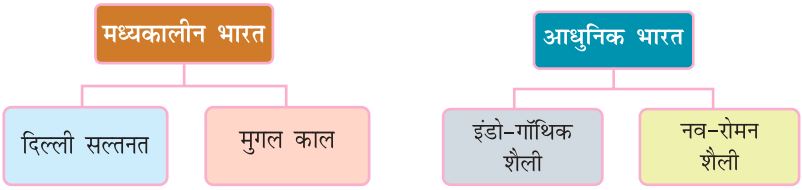

हड़प्पाई कला और वास्तुकला

ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के द्वितीय अर्द्धांश में सिंधु नदी के तट पर एक समृद्ध सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ जो आगे चलकर उत्तर-पश्चिम और पश्चिम भारत के विशाल भाग में फैल गयी। जिसे हड़प्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता के रूप में जाना जाता है। जीवंत कल्पना और कलात्मक संवेदनशीलता इस प्राचीन सभ्यता की विशिष्टता थी जो उत्खनन स्थलों पर पायी गई अनेकानेक **मूर्तियों, मोहरों, मृद्भाण्डों, आभूषणों** आदि से प्रकट होती है। इस सभ्यता के दो प्रमुख स्थल- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो, **शहरी नियोजन** के आरंभिक और सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक हैं। सड़कों का नियोजित नेटवर्क, मकान तथा जल निकास प्रणाली इस युग के दौरान विकसित नियोजन और अभियांत्रिकी कौशल का प्रमाण है।

सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ **महत्वपूर्ण स्थल** और उनकी **पुरातात्विक प्राप्तियां**:

- वर्तमान पाकिस्तान में **हड़प्पा** (रावी नदी के तट पर) - विशाल चबूतरों वाले *छह अन्नागारों* की 2 कतारें, लिंग और योनि के पाषाण प्रतीक, मातृदेवी की मूर्ति, लकड़ी की ओखली में गेहूं और जौ, पासा, ताम्र तुला और दर्पण। इसके अतिरिक्त, कांस्य धातु की बनी हिरण का पीछा करते हुए कुत्ते की मूर्ति, और लाल बालुआ पत्थर से बना पुरुष धड़ खुदाई में प्राप्त किए गए हैं।
- वर्तमान पाकिस्तान में **मोहनजोदड़ो** (सिंधु नदी के तट पर) किले, वृहत् स्नानागार, शवाधान, दाढ़ी वाले पुजारी की मूर्ति, नर्तकी की प्रसिद्ध कांस्य मूर्ति और पशुपति मोहर।
- गुजरात में **धौलावीरा** - विशाल पानी के कुंड अद्वितीय जलदोहन प्रणाली, स्टेडियम, बांध और तटबंध, विज्ञापन पट्टिका की भांति 10 बड़े आकार के संकेताक्षरों वाला अभिलेख। यह सबसे **नवीनतम** खोजा गया IVC **शहर** है।
- गुजरात में **लोथल (सिंधु घाटी सभ्यता का मैनचेस्टर)** - समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण स्थल, गोदीवाड़ा, (जहाज बनाने का स्थान), धान की भूसी, अग्नि वेदिकाएं, चित्रित मृद्भाण्ड, आधुनिक शतरंज, घोड़े और जहाज की टेराकोटा आकृति, 45°, 90° और 180° कोण मापने वाले उपकरण।
- हरियाणा में **राखीगढ़ी** – सिंधु घाटी सभ्यता का **सबसे बड़ा स्थल** माना जाता है। अन्नागार, कब्रिस्तान, नालियां, टेराकोटा की ईंटे मिली हैं। इसे हड़प्पा सभ्यता की **प्रांतीय राजधानी** कहा जाता है।

- **रोपड़** – पंजाब में सतलज नदी के तट पर स्थित है। यहां अंडाकार गड्ढे में मानव शव के साथ दफन कुत्ता तथा तांबे की कुल्हाड़ी के साक्ष्य मिले हैं। आजादी के बाद खोजी गयी पहली साइट।
- राजस्थान में **बालाथल** और **कालीबंगा** – चूड़ी कारखाना, खिलौने, ऊंट की हड्डियां, अलंकृत ईंटें, गढ़ी (दुर्ग) और निचला नगर, अग्नि वेदिकाएं।
- गुजरात में **सुरकोटदा** – घोड़े की हड्डियों का पहला वास्तविक अवशेष।
- हरियाणा में **बनवाली** – (सूखी हुई सरस्वती नदी पर)–खिलौना हल, जौ, लाजवर्द, अग्नि वेदियां, अंडाकार आकार की बस्ती, अरीय (radial) गलियों वाला एकमात्र नगर।
- यमुना के तट पर मेरठ, उत्तर प्रदेश में **आलमगीरपुर** – सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल। प्रमुख खोजों में तांबे के बने हुए टूटे फलक, मिट्टी की बनी वस्तुएं और नांद पर कपड़े की छाप।
- पाकिस्तान में स्थित **मेहरगढ़** को सिंधु घाटी सभ्यता का अग्रदूत माना जाता है, यहां मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार मिले हैं।
- **चनहुदड़ो (भारत का लंकाशायर)** – **बिना गढ़ वाला** अकेला सिंध शहर। यह वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। मनके बनाने का कारखाना, लिपस्टिक का उपयोग यहां पाया गया है।
- **कोट दीजी** वर्तमान पाकिस्तान में स्थित, यहां से टार, बैल और मां देवी की मूर्तियां खुदाई में पाई गई हैं।
- **सुत्कागेनडोर** IVC का सबसे पश्चिमी स्थल, पाकिस्तान में स्थित है। यहां मिट्टी की चूड़ियां मिली हैं।
- **बालू (हरियाणा)** विभिन्न पौधों के अवशेष मिले हैं। (लहसुन के सबसे प्रारंभिक साक्ष्य)।
- **दाइमाबाद (महाराष्ट्र),** IVC का सबसे दक्षिणी स्थल। कांस्य रथ सहित कांस्य की मूर्तियां यहां पाई गई हैं।
- **केरल-नो-धोरो (गुजरात)** IVC के दौरान नमक उत्पादन केंद्र।
- **कोट बाला (पाकिस्तान)** भट्ठी के प्राचीनतम प्रमाण।
- **मांड (जम्मू और कश्मीर)** IVC का सबसे उत्तरी स्थल।

IVC के अन्य प्रमुख स्थलों में देसलपुर (गुजरात), पाबूमठ (गुजरात), रंगपुर (गुजरात), शिकारपुर (गुजरात), सनौली (उत्तर प्रदेश), कुणाल (हरियाणा), करनपुरा (राजस्थान), गनेरीवाला (पंजाब), आदि शामिल हैं।

हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के अवशेष, नगर नियोजन की उल्लेखनीय समझ प्रकट करते हैं। यहां के नगर **आयताकार ग्रिड पैटर्न** पर आधारित थे। सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में जाती थीं और एक-दूसरे को **समकोण** काटती थीं।

उत्खनन स्थलों से मुख्य रूप से **तीन प्रकार के भवन** पाए गए हैं – *आवास गृह, सार्वजनिक भवन और सार्वजनिक* स्नानागार। निर्माण के लिए हड़प्पाई लोग मानकीकृत आयामों वाली **मिट्टी की पक्की ईंटों** का उपयोग करते थे। भली-भांति पकी हुई ईंटों की कई परतें बिछायी जाती थीं और इसे **जिप्सम के गारे** का उपयोग करके एक साथ जोड़ा जाता था।

नगर दो भागों में विभाजित था- **ऊंचे गढ़ (दुर्ग)** तथा **निचला** नगर। *पश्चिमी भाग* में **ऊंचाई पर स्थित गढ़** का उपयोग विशाल आयामों वाले भवनों, जैसे-*अन्नागार, प्रशासनिक भवन, स्तम्भों वाला हॉल* और *आंगन* आदि के लिए किया जाता था। गढ़ी में स्थित कुछ भवन संभवत: *शासकों और अभिजात वर्गों के आवास* थे। हालाँकि, सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों में मिस्र और मेसोपोटामिया सभ्यता के विपरीत शासकों के लिए मंदिर या महल जैसे बड़े स्मारक नहीं हैं। अन्नागार, बुद्धिमत्ता के साथ वायुसंचार वाहिकाओं सहित ऊंचे चबूतरों के साथ डिजाइन किए गए थे। इससे अनाज के भंडारण में मदद के साथ ही कीटों से उनकी रक्षा करने में भी सहायता मिलती थी।

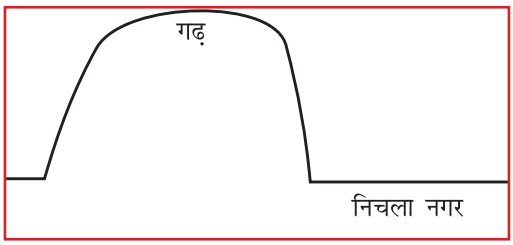

चित्र-1.1: *गढ़ व निचला नगर*

हड़प्पाई नगरों की एक प्रमुख विशेषता **सार्वजनिक स्नानागारों** का प्रचलन था। इससे उनकी संस्कृति में कर्मकांडीय पवित्रता के महत्व का संकेत मिलता है। इन स्नानागारों के चारों ओर *दीर्घाओं* और *कक्षों* का समूह था। सार्वजनिक स्नानागारों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण मोहनजोदड़ो के उत्खनित अवशेषों में **'वृहत् स्नानागार'** है।

नगर के **निचले** भाग में, एक-कक्षीय छोटे भवन पाए गए हैं। इनका उपयोग संभवत: *श्रमिक वर्ग के लोगों* द्वारा आवास के रूप में किया जाता था। कुछ घरों में सीढ़ियां भी थीं जिससे संकेत मिलता है कि ये संभवत: *दो मंजिला* भवन थे। अधिकांश भवनों में निजी कुएं और स्नानगृह थे और वायुसंचार की भी उचित व्यवस्था थी।

चित्र-1.2: *मोहन जोदड़ो का बृहत स्नानागार*

हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी **उन्नत जल निकासी व्यवस्था** थी। प्रत्येक घर से निकलने वाली छोटी नालियां मुख्य सड़क के साथ चलने वाली बड़ी नालियों से जुड़ी थीं। नियमित साफ-सफाई और रखरखाव के लिए नालियों को *शिथिल रूप से ढका* गया था। नियमित दूरियों पर **मलकुण्ड (सिसपिट)** बनाए गए थे। व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों प्रकार की *स्वच्छता* पर दिया गया बल काफी प्रभावशाली है। कई स्थानों पर कुओं की उपस्थित भी देखी गई है।

कई विद्वानों का तर्क है कि टिग्रिस-युफ्रेट्स (दजला-फरात) घाटी के मेसोपोटेमियाई लोग सिंधु घाटी सभ्यता को 'मेलुहा' कहते थे। मेसोपोटामिया में सिंधु घाटी की कई मोहर मिले हैं।

हड़प्पाई सभ्यता की मूर्तियां

हड़प्पाई मूर्तिकार त्रि-आयामी कृतियों से व्यवहार करने में बहुत कुशल थे। सबसे अधिक मोहर, कांस्य मूर्तियां और मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं।

मोहर

पुरातत्वविदों को सभी उत्खनन स्थलों से अलग-अलग आकार व प्रकार की कई मोहरें मिली हैं। जहां *अधिकांश मुहरें वर्गाकार हैं* तो वहीं त्रिकोणीय, आयताकार और वृत्ताकार मोहरों के उपयोग के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यद्यपि मोहर बनाने के लिए नदी तल में पाए जाने वाले मुलायम पत्थर, **स्टेटाइट** का सर्वाधिक उपयोग किया जाता था, लेकिन अगेट, चर्ट, तांबा, काचाभ (फायंस) और टेराकोटा की भी मोहरें मिली हैं। सोने और हाथी दांत की मोहरों के भी कुछ उदाहरण मिले हैं।

अधिकांश मोहरों पर **चित्राक्षर लिपि** (pictographic script) में मुद्रालेख भी हैं तथा इन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। लिपि अधिकांशतः दाएं से बाएं लिखी जाती थी, लेकिन, **द्वि-दिशात्मक लेखन शैली** अर्थात् एक पंक्ति में दाएं से बाएं और दूसरी पंक्ति में बाएं से दाएं भी पाई गई है। इन पर *पशुओं की आकृतियां* (आमतौर पर पाँच) भी मौजूद हैं जिन्हें सतहों पर उत्कीर्णित किया गया है। सामान्य पशु रूपांकन, कूबड़दार बैल, गैंडा, बाघ, हाथी, भैंस, बायसन, बकरी, मारकोर, साकिन, मगरमच्छ आदि के हैं। हालांकि, किसी भी मुहर पर **गाय का कोई साक्ष्य नहीं** मिला है। सामान्यतः, मोहरों पर एक ओर पशु या मानव आकृति है और दूसरी ओर मुद्रालेख है या दोनों ओर मुद्रालेख हैं। साथ ही कुछ मोहरों पर **तीसरी ओर भी** मुद्रालेख हैं।

चित्र-1.3: *यूनिकॉर्न मोहर*

मोहरों का **मुख्य रूप से व्यवसायिक प्रयोजनों के लिए उपयोग** किया जाता था और वे संचार में सहायक होती थीं। मेसोपोटामिया में विभिन्न मोहरों की खोज और लोथल जैसे विभिन्न स्थलों से यह तथ्य पता चलता है कि मोहरों का बड़े पैमाने पर व्यापार के लिए उपयोग किया जाता था। एक छेद वाली कुछ मोहरें शवों पर भी पायी गयी हैं। इससे पता चलता है कि संभवतः इनका **प्रयोग ताबीज के रूप में** किया जाता था। संभवतः इनके धारक द्वारा पहचान के रूप में इनका प्रयोग किया जाता रहा होगा। कुछ मोहरों पर *गणितीय आकृतियां* भी मिली हैं, संभवतः इनका **उपयोग शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए** भी किया जाता होगा। 'स्वास्तिक' सदृश डिजाइन वाली मोहरें भी पायी गई हैं।

मुख्य मोहरों में शामिल हैं - पशुपति की मोहर, यूनीकॉर्न वाली मोहर।

पशुपति वाली मोहर: *मोहनजोदड़ो से मिली स्टेटाइट की मोहर में पालथी मारकर बैठे* ***मानव आकृति*** *या देवता को दर्शाया गया है। पशुपति के रूप में संदर्भित इस आकृति ने तीन सींगों वाला मुकुट पहना है और चारों ओर पशुओं से घिरी है। आकृति के बाईं ओर* ***हाथी*** *और* ***बाघ*** *हैं जबकि दाईं ओर गैंडा और* ***भैंस*** *दिखाई देते हैं। आकृति के आसन के नीचे दो* ***हिरण*** *दर्शाए गए हैं।*

कांस्य मूर्तियां

हड़प्पा सभ्यता व्यापक पैमाने पर कांसे की ढलाई की प्रथा की साक्षी थी। कांसे की मूर्तियों को **'लुप्त मोम तकनीक (lost wax technique)' या 'Cire Perdue'** का उपयोग करके बनाया जाता था। इस तकनीक में, मोम की मूर्तियों पर पहले गीली मिट्टी का लेपन किया जाता था और तब सूखने दिया जाता था। इसके बाद मिट्टी से लेपित मूर्तियों को गर्म किया जाता था जिससे अंदर की मोम पिघल जाती थी। फिर एक छोटे से छेद के माध्यम से मोम को बाहर निकाल दिया जाता था और खोखले सांचे के अंदर पिघली हुई धातु डाली जाती थी। धातु के ठंडा हो जाने और जम जाने के बाद, मिट्टी का लेप हटा दिया जाता था और जैसी मोम की आकृति होती थी उसी आकार की धातु की आकृति तैयार हो जाती थी। *आज भी*, इसी तकनीक का देश के कई भागों में प्रचलन है।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो की कांसे की नर्तकी, कालीबंगा का कांसे का बैल आदि।

नर्तकी *की मूर्ति विश्व की सबसे पुराने कांसे की मूर्ति है। मोहनजोदड़ो में मिली चार इंच की इस मूर्ति में* **केवल आभूषण पहने** *हुए एक नग्न महिला को दर्शाया गया है। इसने बाएं हाथ में चूड़ियां तथा दाहिने हाथ पर* **कंगन** *और* **ताबीज** *पहने हुए हैं। यह अपने कूल्हे पर दाहिने हाथ रखे हुए त्रिभंग नृत्य मुद्रा में खड़ी है।*

टेराकोटा

टेराकोटा मूर्तियां बनाने के लिए पकी हुई मिट्टी को उपयोग किया जाता है। कांसे के मूर्तियों की तुलना में, टेराकोटा की मूर्तियां कम संख्या में पायी गयी हैं और आकार एवं रूप में अनगढ़ हैं। इन्हें **पिंचिंग विधि** (Pinching method) का उपयोग करके बनाया जाता था और ये अधिकांशत: **गुजरात और कालीबंगा** के स्थलों से मिली हैं।

उदाहरण: **मातृदेवी की मूर्ति**, सींग वाले देवता का मुखौटा, खिलौने आदि।

मातृदेवी (Mother Goddess) *की मूर्तियां अनेक सिंधु स्थलों से मिली हैं जिससे इनके महत्व का पता चलता है। यह उन्नत वक्षस्थल पर लटके हुए कण्ठाहार से सुसज्जित एक खड़ी महिला की मूर्ति है। यह धोती/कटिवस्त्र और करधनी पहने हुए है। इसने पंखाकार मुकुट भी पहन हुआ है। चेहरे के रूपांकनों को भी बहुत अनगढ़ ढंग से दिखाया गया है तथा इसमें कुशलता का अभाव है। संभवत: इसकी पूजा समृद्धि के लिए की जाती थी। वह उर्वरता की भी देवी रही होंगी।*

- **दाढ़ी वाले पुजारी** (Bearded Priest) (मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुयी है तथा स्टेटाइट की बनी है।) की अर्द्ध-प्रतिमा (शरीर का ऊपर हिस्सा)। यह तिपतिया (ट्रेफोइल) पैटर्न वाली 'शॉल में लिपटे एक दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति है जिसकी आंखें लम्बी हैं तथा आधी बंद हैं जैसे कि वह ध्यान मुद्रा में हो। इस मूर्ति के दाहिने हाथ पर एक बाजूबंद और सिर पर सादी बुनी हुई पट्टिका है।

- **पुरुष धड़** की **लाल बलुआ पत्थर** की मूर्ति (हड़प्पा से प्राप्त हुई है)। इस धड़ की दिशा आगे की ओर है। इसके कंधे अच्छी तरह से पके हुए हैं और पेट निकला हुआ है। संभवत: सिर और भुजाओं को जोड़ने के लिए गर्दन और कंधों में सॉकेट छिद्र हैं।

मृद्भाण्ड

उत्खनन स्थलों से मिले मृद्भाण्डों को मोटे तौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है- *सादे मृद्भाण्ड* और *चित्रित* मृद्भाण्ड। चित्रित मृद्भाण्डों को **लाल व काले मृद्भाण्डों** के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इसमें पृष्ठभूमि को रंगने के लिए लाल रंग का प्रयोग किया जाता था और चमकदार काले रंग का प्रयोग लाल पृष्ठभूमि पर डिजाइन और आकृतियां बनाने के लिए किया जाता था। वृक्ष, पक्षी, पशुओं की आकृतियां और ज्यामितीय प्रतिरूप चित्रों के आवर्ती विषय थे।

पाए गए अधिकांश मृद्भाण्डों में से **चाक पर बनाए गए मृद्भाण्ड** अति उत्तम हैं। इसके साथ ही कुछ हाथ से भी बने थे। रंग-बिरंगे मृद्भाण्डों के भी कुछ उदाहरण मिले हैं, हालांकि ये बहुत ही दुर्लभ हैं। मृद्भाण्डों का उपयोग सम्भवत: **तीन** मुख्य उद्देश्यों के लिए किया जाता था:

1. सादे मृद्भाण्डों का मुख्य रूप से उपयोग अनाज और पानी के भंडारण आदि जैसे घरेलू प्रयोजनों के लिए किया जाता था।
2. छोटे पात्रों, (सामान्यत: आकार में आधे इंच से भी कम), का सजावटी प्रयोजनों के लिए प्रयोग किया जाता था।
3. तल में बड़े छेद और बगल में छोटे छेदों वाले कुछ **छिद्रित** मृद्भाण्ड भी होते थे। संभवत: इनका उपयोग *शराब उलटने के लिए* किया जाता था।

चित्र-1.4: *(बाएं) लाल और काले मृद्भाण्ड तथा छिद्रित मृद्भाण्ड (दाएं)*

आभूषण

हड़प्पाई लोग आभूषण बनाने के लिए, मूल्यवान धातुओं और रत्नों से लेकर हड्डियों और यहां तक कि पकी हुई मिट्टी जैसी विविधतापूर्ण सामग्री का उपयोग करते थे। पुरुष और महिलाएं **दोनों** कण्ठाहार, पट्टिका, बाजूबंद और अंगूठियों जैसे आभूषण पहनते थे। *करधनी, झुमके और पायल* **केवल महिलाएं ही** पहनती थीं।

कोर्नेलियन, नीलम, क्वार्ट्ज, स्टेटाइट आदि से बने हुए मनके भी काफी लोकप्रिय थे और बड़े पैमाने पर इनका निर्माण किया जाता था। यह बात **चंदहूदड़ो** और **लोथल** में मिले कारखानों से स्पष्ट है। कपड़ों के लिए, हड़प्पाई लोग **कपास** और **ऊन** का उपयोग करते थे। इन्हें अमीरों और गरीबों द्वारा समान रूप से काता जाता था। साथ ही *बाल* और *दाढ़ी की* विभिन्न *शैलियों* से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय के लोग **फैशन** के प्रति भी सजग थे।

मौर्य कला और स्थापत्य कला

श्रमण परंपरा के अंग *बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म* के आगमन के साथ ही गंगा घाटी का धार्मिक और सामाजिक परिदृश्य परिवर्तित होने लगा। चूंकि दोनों धर्म वैदिक युग की 'वर्ण प्रथा' और 'जाति प्रथा' का विरोध करते थे, इसलिए इन्हें उन **क्षत्रिय शासकों** का संरक्षण प्राप्त हुआ जो ब्राह्मणवादी वर्चस्व से सजग हो चुके थे। जैसे ही मौर्यों ने अपनी सत्ता की स्थापना की तो राज्य के संरक्षण और व्यक्तिगत पहल के अंतर्गत विकसित स्थापत्य कला और मूर्तिकला के बीच स्पष्ट सीमांकन देखा जा सकता है। इस प्रकार, मौर्य कला को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है:

दरबारी कला

मौर्य **शासकों** ने राजनीतिक के साथ-साथ धार्मिक कारणों से बड़ी संख्या में स्थापत्य कार्यों का शुभारंभ किया। इन स्थापत्य कार्यों को दरबारी कला के रूप में संदर्भित किया जाता है।

महल या किला

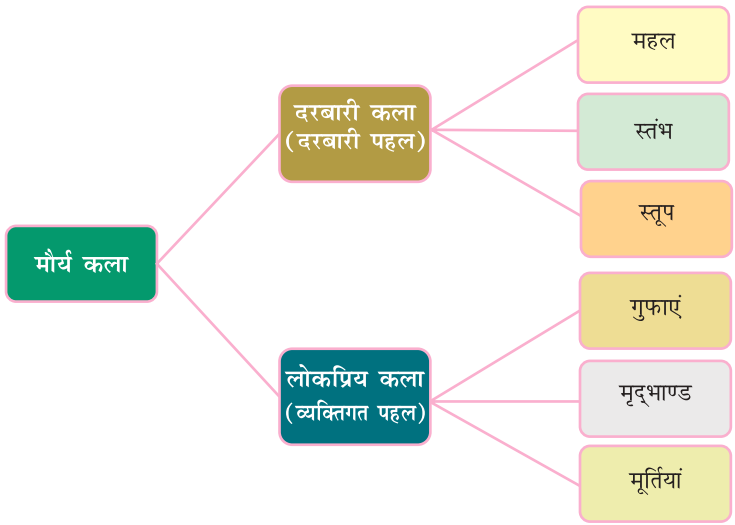

मौर्य साम्राज्य भारत में सत्ता में आने वाला पहला 'शक्तिशाली साम्राज्य था। **पाटलिपुत्र** में राजधानी और **कुम्रहार** में महलों का निर्माण मौर्य साम्राज्य का वैभव प्रतिबिंबित करने हेतु कराया गया था। चंद्रगुप्त मौर्य का महल ईरान में 'पर्सेपोलिस' के 'अकेमीनियन (Achaemanian)' महलों से प्रेरित था। इसकी मुख्य निर्माण सामग्री **लकड़ी** थी। *मेगस्थनीज* ने इस महल का वर्णन मानव जाति की सबसे बड़ी रचनाओं में से एक के रूप में किया था।

चित्र-1.5: *कुम्रहार में अशोक का महल*

इसी प्रकार, *कुम्रहार* स्थित *अशोक का महल* भी एक विशाल संरचना थी। इसमें एक ऊंचा केन्द्रीय स्तंभ

था और यह एक तीन मंजिला लकड़ी का ढांचा था। महल की दीवारों को नक्काशियों और मूर्तियों से सजाया गया था।

स्तम्भ

अशोक के शासनकाल के दौरान स्तंभों पर शिलालेख –राजकीय प्रतीक के रूप में या युद्ध में जीत के उपलक्ष्य में– अति महत्वपूर्ण हो गए। साथ ही उन्होंने राजकीय उपदेशों का प्रचार करने के लिए भी स्तम्भों का उपयोग किया।

औसतन 40 फीट ऊंचे, ये स्तम्भ सामान्यत: **चुनार के बलुआ पत्थर** या प्रस्तर से बनाए गए थे और इसमें **शाफ्ट (Shaft) तथा कैपिटल (capital)** सम्मिलित थे। इसमें लंबा **मूठ (Shaft)** आधार का निर्माण करता था जोकि **प्रस्तर के एक ही खण्ड** अथवा **एकाश्म प्रस्तर** से बना होता था। इसके सबसे ऊपर *कमल* या *घंटे के आकार* में **शीर्ष या ललाट (capital)** रखा जाता था। घंटे के आकार के शीर्ष या ललाट ईरानी स्तम्भों से प्रभावित थे क्योंकि ये स्तंभ अत्यधिक पॉलिशदार और चमकदार थे। ललाट के ऊपर *वृत्ताकार या आयताकार आधार* होता था जिसे **अबेकस (abacus)** कहा जाता है तथा जिस पर **पशु मूर्ति** होती थी।

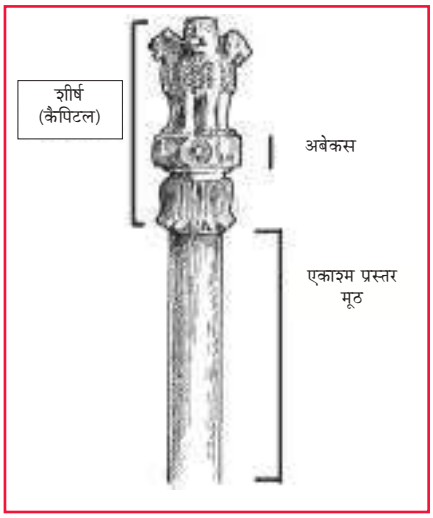

चित्र-1.6: *अशोक स्तंभ की आधारभूत संरचना*

उदाहरण: चंपारण में लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ, वाराणसी के पास **सारनाथ स्तंभ,** आदि।

राष्ट्रीय प्रतीक *(National Emblem)*

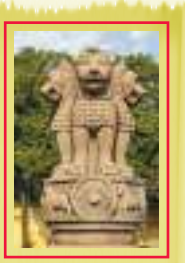

सारनाथ स्तंभ का शीर्ष फलक (abacus) *और पशु भाग भारत का आधिकारिक* ***राष्ट्रीय प्रतीक*** *है। सारनाथ स्तंभ के शीर्ष फलक में, चार दिशाओं को निरूपित करते हुए चार पशु – **चौकड़ी भरता अश्व** (पश्चिम), **हाथी** (पूर्व), **वृषभ** (दक्षिण) और **सिंह** (उत्तर) दर्शाए गए हैं। ये पशु अनंत काल तक अस्तित्व का पहिया घुमाते हुए एक दूसरे का पीछा करते हुए प्रतीत होते हैं।*

हाथी, रानी माया का स्वप्न, एवं उनके गर्भ में प्रवेश करता हुआ श्वेत हाथी दर्शाता है। बैल वृष राशि का चिन्ह दर्शाता है, जिस महीने में बुद्ध का जन्म हुआ था। अश्व कंथक अश्व को निरूपित करता हैं, जिसका बुद्ध ने राज्य से दूर जाने के लिए उपयोग किया था। सिंह ज्ञान प्राप्ति दर्शाता है।

मुंडक उपनिषद *से लिया गया **सत्यमेव जयते** शब्द, जिसका अर्थ 'सत्य की सदा विजय होती है' है, **देवनागरी लिपि** में शिलालेख के नीचे उत्कीर्ण है।*

चार सिंह सभी दिशाओं में धम्म का प्रसार करते हुए बुद्ध को प्रतीकबद्ध करते हैं। इसे बुद्ध द्वारा दिये गए पहले धर्मोपदेश की स्मृति में बनवाया गया था तथा इसे धम्मचक्रप्रवर्तन के नाम से जाना जाता है ।

स्तूप

स्तूप वैदिक काल से भारत में प्रचलित *शवाधान टीले* थे। यह अंत्येष्टि पुंज का पारंपरिक प्रदर्शन होते हैं जिसमें मृतकों के अवशेष और राख को रखा जाता था। अशोक के राज्यकाल के दौरान, स्तूप कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी। उनके राज्यकाल के दौरान लगभग 84,000 स्तूप बनवाए गए थे।

वैदिक परंपरा से प्रेरित स्तूपों को बौद्धों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। *बुद्ध की मृत्यु के बाद 9 स्तूप बनवाए गए थे।* इनमें से 8 में उनकी मेधी में बुद्ध के अवशेष थे जबकि नौवें में वह बर्तन था, जिसमें मूल रूप से इन अवशेषों को रखा गया था। स्तूप के विभिन्न भागों को प्रदर्शित करने वाला मूलभूत आरेख नीचे दिया गया है।

स्तूप का कोर, कच्ची ईंटों का बना होता था जबकि बाहरी सतह का निर्माण पकी ईंटों से किया जाता था और इसे प्लास्टर की मोटी परत से ढका जाता था। ***मेधी*** और ***तोरणों*** को लकड़ी की मूर्तियों द्वारा सजाया गया था। श्रद्धालुओं द्वारा पूजा के प्रतीक के रूप में **प्रदक्षिणा-पथ** के चारों ओर चक्कर लगाया जाता है।

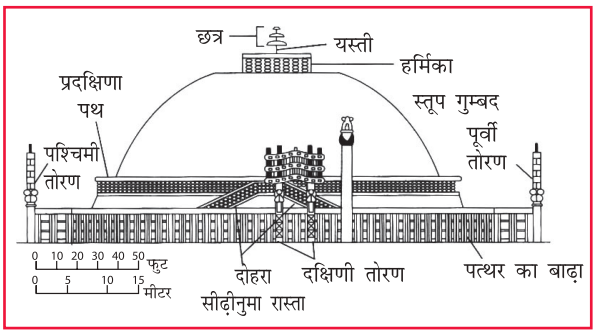

चित्र-1.7 *विभिन्न भागों के साथ स्तूप की आधारभूत संरचना*

उदाहरण: मध्य प्रदेश का **सांची का स्तूप** अशोक के स्तूपों में सबसे प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश में पिपरहवा का स्तूप सबसे प्राचीनतम स्तूप है।

बुद्ध की मृत्यु के बाद बनाए गए 9 स्तूपों के राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, अलकप्प, रामग्राम, वेथपीड़ा (Vethapida), पावा, कुशीनगर और पीपली वन हैं।

अशोक के स्तंभों और अकेमीनियन स्तंभों के बीच अंतर

आधार	अशोक के स्तंभ	अकेमीनियन स्तम्भ (Iran)
रचना	अशोक स्तंभ एकाश्म थे अर्थात् इन्हें प्रस्तर के एक ही खण्ड से बनाया गया था। (मुख्यतः चुनार के बलुआ पत्थर से।)	अकेमीनियन स्तम्भ बलुआ प्रस्तर के विभिन्न टुकड़ों को एक साथ मिलाकर बनाए गए थे।
स्थान	अशोक के स्तंभों को स्वतंत्र रूप से स्थापित कराया जाता था।	अकेमीनियन स्तम्भ सामान्यतः राजभवनों से संलग्न होते थे।

लोकप्रिय कला

राजकीय संरक्षण के अतिरिक्त, गुफा स्थापत्य कला, मूर्तिकला और मृद्भाण्डों के **व्यक्तिगत प्रयास** से भी कला को अभिव्यक्ति मिली। इन्हें एक साथ कला और स्थापत्य कला के लोकप्रिय रूपों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

गुफा स्थापत्य कला

इस अवधि में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफा स्थापत्य कला का उद्भव देखा गया। मौर्य काल के दौरान, जैन और बौद्ध भिक्षु सामान्यतः इन गुफाओं का **विहार यानी निवास स्थल** के रूप में उपयोग करते थे। जबकि आरंभिक गुफाओं का उपयोग आजीवक करते थे, वहीं बाद में ये बौद्ध मठों के रूप में लोकप्रिय हो गए। मौर्य काल के दौरान की गुफाओं की विशेषता **अत्यधिक पॉलिशदार** भीतरी दीवारें व **अलंकृत प्रवेश द्वार थे।**

चित्र-1.8: *बराबर गुफाओं में अलंकृत प्रवेश द्वार*

उदाहरण: बिहार में **बराबर** और **नागार्जुनी** की गुफाओं का निर्माण अशोक तथा उनके पोते दशरथ के राज्यकाल के दौरान तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में किया गया था।

नासिक की गुफाएं

नासिक की गुफाएं 24 बौद्ध गुफाओं का समूह हैं, जिन्हें **'पांडव लेनी'** भी कहा जाता है। ये पहली शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवी के दौरान निर्मित की गई थीं तथा ये हीनयान संप्रदाय से संबंधित हैं। हालांकि, बाद में इन गुफाओं पर महायान संप्रदाय का भी प्रभाव देखा जा सकता है। हीनयान संप्रदाय के अंतर्गत, बुद्ध की उपस्थिति **सिंहासन और पदचिन्ह्** जैसे रूपांकनों और प्रतीकों के उपयोग के माध्यम से दर्शाई गई है। और बाद में, इन गुफाओं में बुद्ध की मूर्तियां भी बनाई गई जो महायान बौद्ध धर्म का प्रभाव निरूपित करती हैं। यह स्थल **जल प्रबंधन की** उत्कृष्ट **प्रणाली** भी दर्शाता है जो ठोस चट्टानों से काटकर बनाए गए तालाबों की उपस्थिति से इंगित होता है।

मूर्तिकला

मूर्तियों का मुख्य रूप से उपयोग स्तूप की सजावट, तोरण तथा मेधी में और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था। मौर्य काल की दो प्रसिद्ध मूर्तियां **यक्ष** और **यक्षिणी** की हैं। ये सभी **तीन धर्मों** (जैन, हिंदू और बौद्ध धर्म) में पूजनीय थीं। यक्षिणी का सबसे पुराना उल्लेख तमिल रचना *शिलप्पादिकारम* में मिलता है। इसी प्रकार, *सभी जैन तीर्थंकर यक्षिणी से संबंधित थे।*

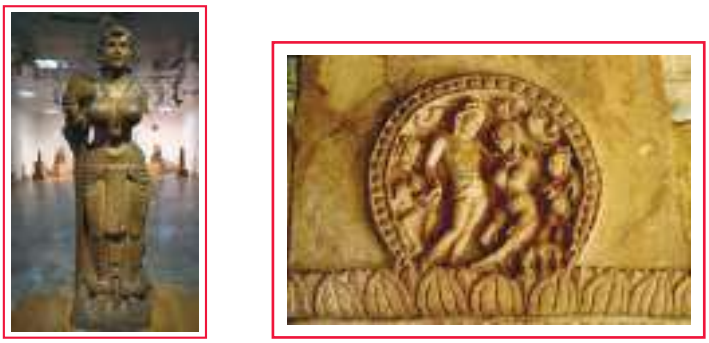

चित्र-1.9: *(बाएं से) यक्षिणी, यक्ष की मूर्ति*

मृद्भाण्ड

मौर्य काल के मृद्भाण्डों को सामान्यत: **उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड** (NBPW) या चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के रूप में जाना जाता है। इनकी विशेषता **काला रंग** और **अत्यधिक चमक** है और सामान्यत: इनका उपयोग **विलासिता की वस्तुओं** के रूप में किया जाता था। इन्हें प्राय: *उच्चतम स्तर के मृद्भाण्ड* के रूप में संदर्भित किया जाता है।

चित्र-1.10: *उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड का नमूना*

मौर्योत्तर कला

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, भारत के विभिन्न भागों में छोटे-छोटे राजवंशों का उदय हुआ। इनमें उत्तर में **शुंग, कण्व, कुषाण** और **शक** प्रमुख थे जबकि दक्षिणी और पश्चिमी भारत में **सातवाहन, इक्ष्वाकु, आभीर** और **वाकाटक** ने प्रसिद्धि प्राप्त की। इसी प्रकार, धार्मिक परिदृश्य ने *शैव, वैष्णव* और *शाक्त* जैसे ब्राह्मण संप्रदायों का उद्भव देखा। साथ ही इस अवधि की कला ने बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को भी परिलक्षित करना आरंभ किया। चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं और स्तूपों के रूप में स्थापत्य कला जारी रही, लेकिन साथ ही कुछ राजवंशों ने अपनी स्वयं की कुछ अनूठी विशेषताएं प्रचलित की। इसी प्रकार, मूर्ति कला की विभिन्न 'शैलियों का उद्भव हुआ और मौर्योत्तर काल में मूर्ति कला अपने **चरमोत्कर्ष** पर पहुंच गयी।

स्थापत्य कला

चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएं

मौर्य काल की भांति चट्टानों से बनाई गई गुफाओं का निर्माण जारी रहा। हालांकि, इस अवधि में चट्टानी गुफाओं के **दो** प्रकारों अर्थात् **चैत्य** और **विहार** का विकास देखा गया। यह विहार बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए **आवासीय कक्ष** होते थे और इनका विकास मौर्य साम्राज्य के दौरान हुआ था। चैत्य कक्षों का विकास इस अवधि के दौरान हुआ था। चैत्य मुख्य रूप से समतल छतों वाले चतुष्कोणीय कक्ष थे और **प्रार्थना कक्ष** के रूप में इनका उपयोग किया जाता था। इन गुफाओं में खुले प्रांगण तथा बारिश से बचाने के लिए पत्थर-रोड़ी की दीवारें भी थीं। इन्हें मानव और पशु आकृतियों से अलंकृत किया गया था।

उदाहरण: कर्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं (29 गुफाएं - 25 विहार + 4 चैत्य) आदि।

उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएं, ओडिशा

वर्तमान भुवनेश्वर के निकट प्रथम-द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में कलिंग राजा खारवेल के अधीन इन्हें बनाया गया था। इस गुफा परिसर में मानव निर्मित और प्राकृतिक दोनों प्रकार की गुफाएं हैं। संभवत: जैन भिक्षुओं के निवास के लिए इन्हें बनाया गया था। उदयगिरि में 18 और खंडगिरी में 15 गुफाएं हैं।

उदयगिरि की गुफाएं **हाथीगुम्फा अभिलेख** के लिए प्रसिद्ध हैं जिसे **ब्राह्मी लिपि** में उत्कीर्णित किया गया था। यह अभिलेख 'जैन नमोकार मंत्र' के साथ आरम्भ होता है और राजा खारवेल द्वारा किए गए विभिन्न सैन्य अभियानों पर प्रकाश डालता है। **उदयगिरी में रानीगुम्फा** दो-मंजिला **गुफा** है और उसमें कुछ सुंदर मूर्तियां हैं।

स्तूप

मौर्योत्तर काल में स्तूप, *विशाल* और *अधिक अलंकृत* होते गए। लकड़ी और ईंट के स्थान पर *प्रस्तर* का अधिक से अधिक उपयोग किया जाने लगा। शुंग राजवंश ने स्तूपों के सुंदरतापूर्वक अलंकृत प्रवेश द्वारों के रूप में तोरण का निर्माण आरंभ किया। तोरणों को जटिल आकृतियों और पैटर्नों के साथ उत्कीर्णित किया जाता था और ये **हेलेनिस्टिक** (Hellenistic or Greek) **प्रभाव** के साक्ष्य हैं।

उदाहरण: मध्य प्रदेश में भरहुत का स्तूप, सांची के स्तूप का तोरण, आदि।

मूर्ति कला

इस अवधि में मूर्ति कला की **तीन** प्रमुख शैलियों अर्थात् गांधार, मथुरा और अमरावती शैली का विकास अलग-अलग स्थानों पर हुआ।

गांधार शैली

आधुनिक पेशावर और अफगानिस्तान के निकट पंजाब की पश्चिमी सीमाओं से संलग्न हिस्से में गांधार कला शैली का विकास हुआ। यूनानी आक्रमणकारी अपने साथ **यूनानी और रोमन मूर्तिकारों** की परंपराएं लाए जिससे इस क्षेत्र की स्थानीय परंपराएं प्रभावित हुईं। इस प्रकार, गांधार शैली को **कला की ग्रीक-इंडियन शैली** के रूप में भी जाना जाने लगा।

गांधार शैली का विकास 50 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसवी तक की अवधि में दो चरणों में हुआ। जहां आरंभिक शैली को **नीले-धूसर बलुआ प्रस्तर** के प्रयोग के लिए जाना जाता है, वहीं उत्तरवर्ती शैली में मूर्तियां बनाने के लिए **मिट्टी और प्लास्टर का उपयोग** किया जाता था। बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियां **ग्रीक-रोमन देवताओं** पर आधारित हैं तथा *अपोलो की मूर्ति से मिलती-जुलती* हैं।

मथुरा शैली

मथुरा शैली का विकास *पहली और तीसरी 'शताब्दी ईसवी* के बीच की अवधि में यमुना नदी के किनारे हुआ। मथुरा शैली की मूर्तियां उस समय के **सभी तीनों धर्मों** (*बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म*) की कहानियों और चित्रों से प्रभावित थी। ये मूर्तियां मौर्य काल के दौरान मिली यक्ष मूर्तियों के नमूने पर आधारित हैं।

मथुरा शैली ने मूर्तियों में **प्रतीकों** का प्रभावशाली उपयोग दिखाया। हिंदू देवताओं का प्रदर्शन उनकी 'आयुध (हथियार और उपकरन)' का उपयोग करके किया गया था। उदाहरण के लिए, शिव को लिंग और मुखलिंग के माध्यम से दिखाया गया है। इसी प्रकार, बुद्ध के सिर के चारों ओर का प्रभामंडल गांधार शैली की तुलना में बड़ा है और ज्यामितीय पैटर्न से अलंकृत है। बुद्ध को दो बोधिसत्वों (कमल पकड़े पद्मपाणि और वज्र पकड़े वज्रपाणि) से घिरा हुआ दिखाया गया है।

अमरावती शैली

भारत के दक्षिणी भाग में, अमरावती शैली का विकास **सातवाहन शासकों** के संरक्षण में **कृष्णा नदी के किनारे** हुआ। जहां अन्य दो शैलियों ने एकल आकृतियों पर बल दिया। वहीं, अमरावती शैली में **गतिशील आकृतियों** या **कथात्मक कला** के प्रयोग पर अधिक बल दिया गया। इस शैली की मूर्तियों में त्रिभंग आसन यानी 'तीन झुकावों के साथ शरीर' का अत्यधिक प्रयोग किया गया है।

गांधार, मथुरा और अमरावती शैलियों के बीच अंतर

आधार	गांधार शैली	मथुरा शैली	अमरावती शैली
बाहरी प्रभाव	**यूनानी** या हेलेनिस्टिक मूर्ति कला का भारी प्रभाव, अत: इसे **भारतीय-यूनानी कला** के रूप में भी जाना जाता है।	**यह शैली स्वदेशी रूप में** विकसित हुई तथा बाह्य संस्कृतियों से प्रभावित नहीं थी।	**यह शैली भी स्वदेशी रूप में** विकसित हुई और बाह्य संस्कृतियों से प्रभावित नहीं थी।
प्रयुक्त सामग्री	प्रारंभिक गांधार शैली में **नीले-धूसर बलुआ प्रस्तर** का उपयोग किया जाता था, जबकि बाद की अवधि में **मिट्टी और प्लास्टर** का उपयोग किया गया।	मथुरा शैली की मूर्तियां **चित्तीदार लाल बलुआ प्रस्तर** का उपयोग करके बनाई गई थीं।	अमरावती शैली की मूर्तियां **सफेद संगमरमर** का उपयोग करके बनाई गई थीं।
धार्मिक प्रभाव	ग्रीको रोमन देवताओं से प्रभावित एवं मुख्य रूप से **बौद्ध चित्रकला।**	उस समय के **तीनों धर्मों** यानी हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म का प्रभाव।	मुख्य रूप से **बौद्ध प्रभाव।**
संरक्षण	**कुषाण** शासकों का संरक्षण।	**कुषाण** शासकों का संरक्षण।	**सातवाहन** शासकों का संरक्षण।
विकास क्षेत्र	**उत्तर पश्चिम सीमांत,** आधुनिक कंधार क्षेत्र में विकसित हुई। कंकालीटीला जैन मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध है।	**मथुरा, सोंख** और **कंकालीटीला** में और आसपास के क्षेत्रों में विकसित हुई कंकालीटीला जैन मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध है।	**कृष्णा-गोदावरी की निचली घाटी** में, अमरावती और नागार्जुनकोंडा में और आसपास के क्षेत्रों में विकसित हुई
बुद्ध की मूर्ति की विशेषताएं	लहराते बालों के साथ, बुद्ध को **आध्यात्मिक मुद्रा** में दिखाया गया है। उन्होंने **बहुत कम आभूषण** धारण किए हैं और **योगी** मुद्रा में बैठे हैं। आंखें **आधी बंद** हैं जैसे कि ध्यान मुद्रा में हों। सिर पर **उभार या जटा** को दिखाया गया है। यह बुद्ध की सर्वज्ञता को दर्शाता है।	बुद्ध को मुस्कुराते चेहरे के साथ **प्रसन्नचित्त** दिखाया गया है। तंग कपड़े पहने हुए, शरीर हृष्ट -पुष्ट है। चेहरा और सिर **मुंडा** हुआ है। बुद्ध विभिन्न मुद्राओं में **पद्मासन** में बैठे हैं और उनका चेहरा विनीत भाव दर्शाता है। सिर पर वैसा ही **उभार या जटा** दिखायी गयी है।	चूंकि मूर्तियां सामान्यत: **कथात्मक कला** का अंग हैं। अत: बुद्ध की व्यक्तिगत विशेषताओं पर कम बल दिया गया है। मूर्तियां सामान्यत: बुद्ध के जीवन और **जातक कथाओं** को दर्शाती है अर्थात, मानव और पशु दोनों रूप में बुद्ध के पिछले जीवन को बताती हैं।

चित्र-1.11: *(बाएं से) गांधार कला शैली, मथुरा कला शैली, कला की अमरावती शैली*

यूनानी कला और रोमन कला

यू और रोमन शैली के बीच कुछ अंतर है तथा गांधार शैली दोनों शैलियों का एकीकरण करती है। यूनानियों की **आदर्शवादी** शैली भगवान और अन्य मनुष्यों के पेशीय चित्रण में बल और सौंदर्य दर्शाते हुए परिलक्षित होती है। **संगमरमर** का उपयोग करके यूनानी पार्थेनन की कई यूनानी पौराणिक आकृतियों की मूर्तियां बनाई गई हैं।

वहीं दूसरी ओर, रोमवासी अलंकरण और सजावट के लिए कला का उपयोग करते थे जबकि यूनानी आदर्शवाद के विपरीत प्रकृति में **यथार्थवादी** थे। रोमन कला यथार्थवाद को प्रदर्शित करती है तथा वास्तविक लोगों एवं प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण करती है। रोमवासी अपनी मूर्तियों में **कंक्रीट** का उपयोग करते थे। रोमवासी अपने भित्ति चित्रों के लिए भी प्रसिद्ध थे।

चित्र-1.12: *यूनानी-रोमन शैली में बुद्ध और रोमन चित्रांकन समानताएं दर्शा रहा है।*